IJPSR Vol. 1 Vol. 1 Issue 1 Oct - Dec (2025) 40–42

eISSN: 3139-342X

International Journal of Primary and Secondary Research

International, Double-Blind, Quarterly, Peer-Reviewed, Refereed, Edited and Open Access Research Journal
Journal homepage: ijpsr.co.in

भारतीय समाज पर बढ़ता पाश्चात्य प्रभाव

डा0 कर्मेन्द्र सिंह सेंगर*[1]

[1]*प्रवक्ता-हिन्दी, श्री मलखानसिंह महाविद्यालय टूलई (हाथरस)*

*Corresponding author. E-mail address: karmendrasinghaingar@gmail.com

DOI- https://doi.org/10.59436/ijpsr.v2i4.08.hin.3139-342X

ARTICLE INFO

Article history:
Received 18 October 2025
Received in revised form 10 November 2025
Accepted 14 December 2025
Available online 25 December 2025

Keywords:
भारतीय समाजए पाश्चात्य प्रभावए पश्चिमीकरणए वैश्वीकरणए आधुनिकीकरणए भारतीय संस्कृतिए सामाजिक परिवर्तनए सांस्कृतिक परिवर्तनए युवा संस्कृतिए उपभोक्तावादए व्यक्तिवादए पारिवारिक संरचनाए जीवन.शैलीए परंपरा और आधुनिकता।

ABSTRACT

भारतीय समाज अपनी प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओंए विविध सामाजिक संरचनाओंए धार्मिक मान्यताओं और सामुदायिक मूल्यों के लिए विशिष्ट पहचान रखता है। वैश्वीकरणए आधुनिक शिक्षाए औद्योगीकरणए नगरीकरणए सूचना.प्रौद्योगिकी तथा संचार माध्यमों के तीव्र विस्तार के कारण भारतीय समाज पर पाश्चात्य प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। इस प्रभाव ने भारतीय जीवन.शैलीए पहनावेए खान.पानए भाषाए शिक्षाए पारिवारिक संरचनाए विवाह संबंधोंए युवा संस्कृति और सामाजिक मूल्यों में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। पाश्चात्य प्रभाव के परिणामस्वरूप व्यक्तिवादए व्यक्तिगत स्वतंत्रताए लैंगिक समानताए वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिक जीवन.मूल्यों को प्रोत्साहन मिला हैए वहीं उपभोक्तावादए भौतिकवादए पारंपरिक मूल्यों में कमी तथा पारिवारिक एवं सामुदायिक संबंधों में परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। भारतीय समाज ने इन प्रभावों को पूर्णतः स्वीकार करने के बजाय अनेक स्तरों पर उनका स्थानीय संस्कृति के साथ समन्वय किया है। अतः पाश्चात्य प्रभाव को केवल सांस्कृतिक परिवर्तन के रूप में नहींए बल्कि भारतीय परंपरा और आधुनिकता के बीच निरंतर संवाद एवं पुनर्संरचना की प्रक्रिया के रूप में समझना आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन भारतीय समाज पर बढ़ते पाश्चात्य प्रभाव के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों तथा इसके सामाजिक.सांस्कृतिक परिणामों का विश्लेषण करता है।

प्रस्तावना

यह सर्वथा सत्य प्रतीत होता है कि कोई भी विदेशी जाति अथवा शासक जब किसी देश पर शासन करते हैं तो उनकी संस्कृति का प्रभाव भी दृष्टिगोचार होता है। भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना के पश्चात हमारे देश में रेल, डाक, तार, मोटर, बिजली, कल-कारखानों तथा अन्यान्य साधनों और संसाधनों का आविष्कार, विकास और प्रचार हुआ। परिणाम यह हुआ कि भारतीय जन जीवन में तीव्र गति से विकास हुआ। उपर्युक्त आधुनिक सुविधा उपयोगी संसाधनों ने हमारे सामाजिक जीवन और विचार धारा में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन उपस्थित कर दिया है। योरोपीय विचार धारा के प्रचार का अंग्रेजों के रहन-सहन का तथा ईसाई मिशनरियों का हिन्दू धर्म पर प्रबल प्रहार हुआ। नवीन बौद्धिक जागृति ने भी भारतीय विचार धारा पर प्रहार किया और उसको हिला दिया है।

योरोपीय सामाजिक जागरण और औद्योगिक क्रान्ति ने समूचे विश्व की व्यवस्थाओं को परिवर्तित कर दिया तो भारतीय समाज कैसे अछूता रह सकता था। हमारे देश में भी विकास की यह लहर आयी और स्वतंत्रता के प्रश्चात तो विकास की प्रतिस्पर्धा और अंधी दौड़ ने राष्ट्रीय जीवन की शैली ही बदल दी है। सच तो यह है कि औद्योगिक सभयता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं भौतिकवादी संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को भी अत्यधिक प्रभावित किया है। इस संदर्भ में अनेक भारतीय विचारक भी सहमत हैं कि दो संस्कृति परस्पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से एक दूसरे को अवश्य प्रभावित करती है। अतः स्पष्ट है कि भौतिकवादी संस्कृति ने भारतीय समाज को आकृष्ट और प्रभावित किया है।

भारतीय समाज पर पाश्चात्य प्रभाव को विविध रूपों में देखा जा सकता है। पाश्चात्य संस्कृति ने सर्वप्रथम हमारे संयुक्त परिवार प्रथा एवं जातिवाद पर अपना प्रभाव छोड़ा है। कारण कि अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत में जाति प्रथा जोरों पर थी। पूरे भारतीय समाज में संयुक्त परिवार प्रथा प्रचलित थी। पाश्यात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव के फलस्वरूप देश में बड़े-बड़े कल कारखानों की स्थापना हुई। जिसके कारण भारतीय गृह उद्योग धंधे नष्ट-भ्रष्ट हो गये।

महानगरों के विकास में जातीय कट्टरता समाप्त होने लगी। एक ही बड़े कारखाने में विभिन्न जातियों के लोग कार्य करने लगे। होटल,

This is an Open Access article published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

सिनेमाघरों, पार्को, कॉलेजों, अस्पतालों और बाजार में विभिन्न जाति के लोग साथ-2 कार्य करने के लिए विवश हुए अतः जातीय बंधन भी तेजी से टूटने लगे। सह-शिक्षा, विज्ञान तथा श्रमिकों के नगरों में बसने के कारण जाति-पॉति, छूआ-छूत, निर्थक समझा जाने लगा। उपर्युक्त कारणों से संयुक्त परिवार छोटा और एकता परिवार बना। पाश्चात्य संस्कृति ने न केवल हमारे समाज के प्रमुख घटक संयुक्त परिवार और जातिवाद को ही ध्वस्त किया अपितु उसने भारतीय खान-पान, रहन-सहन, वेश भूषा सभी को बदला है। अंग्रेजों की शैली पर ही भारतीय भी छुरी और कॉटे से खाना खाने लगे। जूते पहन कर भोजन करना, 'बैड-टी पीना, सूट-बूट और टाई बॉधना, अभिवादन में हाथ हिलाना, बॉय-बॉय करना आदि-आदि पाश्चात्य जीवन शैली के प्रतीक चिन्ह हैख् जो हमारे समाज के अंग बन चुके हैं। अब कोई भी भारतीय टोपी पहनना, चोटी रखना, जनेऊ धारण करना पसंद नहीं करता। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीयों में निसंन्देह पाश्चात्य प्रभाव से ग्रसित देखा जा सकता है।

पाश्चात्य संस्कृति के साथ-2 पाश्यात्य शिक्षा ने भी भारतीय समाज को अत्यधिक प्रभावित किया है। अंग्रेजों ने अपने शासन, व्यापार और धर्म को प्रचारित तथा प्रसारित करने के लिए अंग्रजी शिक्षा प्रदान करने हेतु स्कूल कॉलेज तथा विश्वविद्यालयों की स्थापना की। अंग्रेज शासकों की यह सोच थी कि अंग्रेजी पढ़े-लिखे नवयुवक नौकरी की ओर आकृष्ट होंगे तथा ईसाई धर्म में भी दीक्षित होंगे। अंग्रेजों का यह सोच सत्य सिद्ध हुआ। अनेक भारतीय नवयुवक एवं नवयुवती ईसाई बने। अंग्रेजी की नौकरी पाने में सफल भी हुए। कालान्तर में तो अंग्रेजी शिक्षा लेकर एक बहुत बड़ा बाबू वर्ग ही तैयार हो गया। यह वही वर्ग है जिसने अंग्रेजी शासन और सत्ता को स्थायित्व प्रदान किया। सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि रामधारी दिनकर ने अंग्रेजी शिक्षा के प्रति अपनी सटीक टिप्पणी प्रस्तुत की है- ''अंग्रेजी की शिक्षा भारत में इस उद्देश्य से चलायी गई थी कि यहॉ के अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग तन से भारतीय, किन्तु मन से अंग्रेज हो जायें, जिससे अंग्रेजों का विरोध करने की उनकी इच्छा ही नहीं हो।'' पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने जहॉ हमारी शिक्षा को तहस-नहस किया वहीं यह भी एक बड़ा सत्य है कि पाश्चात्य शिक्षा ने भारतीयों में नवीन चेतना पैदा कर दी जो राष्ट्रीय एकता और स्वाधीनता आन्दोलन के पक्ष में सहायक हुई। इसी शिक्षा के माध्यम से भारतीयों ने नवीन-2 ज्ञान विज्ञान अर्जित कर व्यक्तिगत तथा सामाजिक विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान किया है।

पाश्चात्य शिक्षा ने विज्ञान, इतिहास, पुरातत्व, मानवशास्त्र, मनोविज्ञान, मेडीकल, इंजीनियरिंग आदि विषय देशवासियों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया। परिणामतः भारतवर्ष में बहुमुखी प्रगति और उन्नति हुई। देशवासियों के दृष्टिकोण में उदारता एवं व्यापकता का भाव उदय हुआ। समाचार पत्रों और प्रेस ने भी अपनी सक्रिय भूमिका निभायी। भारत का विश्व के अनेक देशों से सम्पर्क स्थापित हुआ। पूरे देश में सहस्त्रों स्कूल, कॉलेजों और महाविद्यालय खुले जिससे शैक्षिक चेतना जागृत हुई। अंग्रेजी भाषा के द्वारा विश्व ज्ञान-विज्ञान को देखने, समझने और पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। कहने का अभिप्राय यह है कि आधुनिक दौर में पाश्यात्य सभ्यता और संस्कृति का प्रचार व प्रसार शिक्षा ने स्वतत्रंता पूर्व जहॉ राननीतिक चेतना को जागृत किया जिससे राष्ट्र निर्माण और प्रगति में भी उसने अद्वितीय भूमिका निभायी।

विषय विस्तार

परम्परागत भारतीय समाज का पाश्चात्य प्रभाव स्वीकार करने का एक सुखद परिणाम यह दृष्टिगोचर हुआ कि लोगों का नारी के प्रति सामंती दृष्टिकोण में परिवर्तन आया। ब्रिटिश शासन से पूर्व भारतीय नारी की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। सती प्रथा तथा बाल विवाहों का प्रचलन था। नारी को भोग की वस्तुत माना जाता था और उस पर अनेक प्रकार के अत्याचार किये जाते थे। अंग्रेजों के आगमन के पश्चात शिक्षा का प्रसार हुआ एवं नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया और विधवा विवाह को मान्यता प्रदान की गई। इसके साथ-साथ प्रेम विवाह एवं कानूनी विवाह का प्रचलन भी हुआ और तलाक की प्रथा का समाज में पदापर्ण हुआ।

स्वातत्र्योत्तर भारतीय समाज में नारी के प्रति दृष्टिकोण में जो उदारता दिखायी पड़ती है उसकी अभिव्यक्ति छायावाद और छायावादोत्तर युगीन साहित्य में स्पष्टतः देखी जा सकती है। छायावादी कवियों ने जहॉ नारी के सौंदर्य में मानवीय गुणों को देखा वहीं रहस्यवादी कवियों ने उसकी सत्ता की तुलना प्रस्तुत करते हुए उसे प्रेरणाशक्ति का आदि बिन्दु माना है। प्रगतिवादी कवियों ने उसको समता के आसन पर बैठाने का भरसक प्रयत्न किया। डॉ0 रामकुमार वर्मा नारी में समस्त मानवीय गुणों का समावेश कराकर उसे आदर्श रूप में देखते हैं। उनके रचना संसार में नारी एक आदर्श चरित्र के रूप में उपस्थित हुई है। भारतीय संस्कृति में उसका नारीत्व मातृत्व में सार्थक होता है। अतः कवि डॉ0 रामकुमार वर्मा का नारी के प्रति दृष्टिकोण विशुद्ध आदर्शवादी है। उनके साहित्य के नारी चरित्र इस सत्य की पुष्टि करते दिखलायी पड़ते हैं।

निष्कर्ष

पश्यात्य संस्कृति का एक प्रभाव का लक्षण धर्म और उपासना सम्बन्धी भी है। अंग्रेजों ने भारत में ईसाई धर्म के प्रचारार्थ हिन्दू धर्म की रूढ़ियों और अंध विश्वास को अपना लक्ष्य बनाया। पादरी और ईसाई धर्म के प्रचारकों ने भारतीय रूढ़ियों, पाखण्ड, अंधविश्वास, जादू-टौने, अशिक्षा तथा कर्मकाण्ड पर कटु प्रहार किये। उन्हें हेय दृष्टि से देखा । इसका प्रभाव भारतीय जनमानस पर भी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से पड़ा। भारतीय स्वयं अपने धर्म से विरत और विमुख होते चले गये। उन्हें ईसाई धर्म की समता और एकेश्वरवाद का दर्शन प्रिय लगा। अनेक अछूत और दलित वर्ग के लोग हिन्दू धर्म के अछूत व्यवहार और उत्पीड़न से मुक्ति पाने हेतु इसाई बन गये। ईसाई धर्म को स्वीकार करने का एक लाभ लोगों को यह मिला कि उन्हें समाज में सम्मान जनक स्थान मिला। चर्च की ओर से उन्हें संरक्षण और अभयदान भी मिला, दूसरी ओर उनको रोजगार आदि अन्य उपयोगी एवं आवश्यक साधन भी उपलब्ध होने लगे। तीसरे सदियों से सताये उपेक्षितों और पीड़ितों को सोसायटी में प्राथमिकता मिली, गौरव और सम्मान मिला। समाज में धर्मान्तरित हिन्दुओं की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति में अन्तर आया। उन्हें समाज में शिक्षा, व्यापार और धार्मिक स्वतंत्रता मिली। अतः ईसाई धर्म का आकर्षण उन्हें प्रिय और सम्मान जनक लगा। ऐसी सामाजिक बदलाव की स्थिति को देखकर अनेक हिन्दू संगठन और सुधारवादी आश्रमों द्वारा मानववादी आन्दोलन चलाये

This is an Open Access article published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

जाने लगे। आर्य समाज, ब्रह्मसमाज, रामकृष्णपरम हंस आश्रम इसके प्रमाण हैं ।

संदर्भ सूची -

श्रीनिवास, एम. एन. (1952)। दक्षिण भारत के कूर्गों में धर्म और समाज। ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

दुबे, एस. सी. (1990)। भारतीय समाज। नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया।

देसाई, ए. आर. (2005)। भारत में ग्रामीण समाजशास्त्र। मुंबई: पॉपुलर प्रकाशन।

कपाड़िया, के. एम. (1966)। भारत में विवाह और परिवार। ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

बेतेइय, आंद्रे (2002)। समाजशास्त्र: दृष्टिकोण और पद्धति पर निबंध। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

गिडेन्स, एंथनी (1990)। आधुनिकता के परिणाम। स्टैनफोर्ड: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

अप्पादुरई, अर्जुन (1996)। आधुनिकता का विस्तार: वैश्वीकरण के सांस्कृतिक आयाम। मिनियापोलिस: यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस।

योगेंद्र सिंह (1973)। भारत में आधुनिकीकरण: भारतीय परंपरा का एक अध्ययन। नई दिल्ली: ओरिएंट लॉन्गमैन।

शर्मा, राम आहूजा (2014)। भारतीय समाज: संरचना और परिवर्तन। नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स।

एनसीईआरटी (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

भारत सरकार। (2011)। भारत में सामाजिक परिवर्तन और विकास। नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)।

वर्मा, एस. पी. (2008)। भारतीय समाज और सामाजिक परिवर्तन। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।

राधाकमल मुखर्जी (1948)। भारत में सामाजिक संरचना। नई दिल्ली: हिंद किटाब्स।

कोठारी, राजेश्वरी। (2005)। भारतीय समाज में परिवर्तन और विकास। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

This is an Open Access article published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)